International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 03-03-2023, Accepted: 18-03-2023, Published: 03-04-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 50-51

1857 की क्रांति में कानपुर की भूमिका

गौरव सिंह
इतिहास विभाग, जामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
इस आलेख के माध्यम से हमने 1857 की क्रान्ति में कानपुर की भूमिका का विश्लेषण किया है। यह क्रांति एक सशस्त्र सिपाही विद्रोह के रूप में शुरू हुई व जल्दी ही इसने एक शक्तिशाली जन क्रांति का स्वरूप धारण कर लिया। यह विद्रोह दो वर्षों तक भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चला। इस हिंसक तूफान ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला कर रख दिया। कानपुर में नाना साहब,तात्या टोपे,अजीमुल्ला खां तथा अजीजनबाई ने मुख्य भूमिका निभाई। इस विद्रोह का अंत भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की समाप्ति के साथ हुआ जिसके बाद पूरे भारत पर ब्रिटिश ताज का प्रत्यक्ष शासन प्रारम्भ हो गया।

मूल शब्दः क्रांति, बिठूर, स्वतन्त्रता संग्राम, पेंशन सत्तीचौरा घाट इत्यादि

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख स्थलों में से एक कानपुर था, इसका क्रान्ति में अहम योगदान रहा है। कानपुर जिसे अंग्रेजों के समय कॉनपोर के नाम से जाना जाता था, गंगा नदी के किनारे बसा एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक और औद्योगिक केंद्र भी है। 1857 के विद्रोह की भूमिका व योजना कानपुर के बिठूर में ही बनाई गई थी।

भारतीय जनमानस का 1857 के पश्चात् औपनिवेशिक शासन द्वारा अपनाई गई नीतियों के कारण ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध असंतोष तथा प्रतिरोध की प्रथम व्यापक अभिव्यक्ति 1857 में हुई। ब्रिटिश विस्तारवादी नीतियों, आर्थिक शोषण तथा प्रशासनिक नवोन्मेषों ने भारतीय राज्यों के शासकों, सिपाहियों, जमींदारों, किसानों, व्यापारियों, शिल्पकारों इत्यादि को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। यद्यपि क्रान्ति की शुरुआत मेरठ से हुई परन्तु कानपुर इस विद्रोह का सबसे बड़ा केंद्र बनकर उभरा ।

क्रांति के स्वरूप को लेकर इतिहासकारों में विवाद है। यह विवाद मुख्यतः तीन बिंदुओं पर आधारित है–सैनिक विद्रोह,भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम संघर्ष, सामंतीय असंतोष। ज्यादातर अंग्रेज इतिहासकार इस विद्रोह को एक सैनिक विद्रोह मानते हैं जैसा कि सर जॉन सीले के अनुसार "यह विद्रोह पूरी तरह से देशभक्ति रहित स्वार्थपूर्ण सैनिक विद्रोह था, जिसका न तो कोई देशज नेतृत्व था और न ही कोई जन समर्थन।" अन्य कुछ अंग्रेज इतिहासकारों ने (एल. ई. आर. रीज़, टी. आर. होम्स) इसे कट्टरपंथियों द्वारा ईसाइयों के विरुद्ध संग्राम कहा या सभ्यता और बर्बरता के बीच संघर्ष कहा, जो बिल्कुल प्रासंगिक नहीं था। परन्तु विनायक दामोदर सावरकर ने अपनी पुस्तक 'फर्स्ट वॉर ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस' में इसे सुनियोजित भारतीय विद्रोह व स्वतंत्रता का पहला युद्ध मानते हैं। सावरकर के मत से सहमति व्यक्त करते हुए डॉक्टर एस.एन. सेन ने अपनी पुस्तक '1857' में विचार व्यक्त किया,कि जो कुछ धर्म के लिए लड़ाई के रूप में शुरू हुआ वह स्वतंत्रता संग्राम के रूप में समाप्त हुआ। एस.एन. सेन तथा सावरकर के मत के प्रति पूर्ण असहमति व्यक्त करते हुए आर.सी.मजूमदार ने कहा कि "तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय संग्राम न तो पहला, न ही राष्ट्रीय तथा न ही स्वतंत्रता संग्राम था। 1857 की क्रांति के समय विस्कांट पामर्स्टन ब्रिटिश प्रधानमंत्री थे। ब्रिटिश कंजरवेटिव पार्टी के सांसद बेंजामिन डिजराइली ने इस क्रांति को राष्ट्रीय विद्रोह कहा। इस विद्रोह में सिपाहियों के अतिरिक्त किसानों दस्तकारों, जमींदारों इत्यादि ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। क्रांति भारत के अनेक हिस्सों में फैली। विद्रोह के प्रमुख केंद्र और उनके नेतृत्वकर्ता निम्नलिखित है–

- दिल्ली – जनरल बख्त खान
- कानपुर – नाना साहब
- लखनऊ – बेगम हजरत महल
- बरेली – खान बहादुर
- बिहार – कुंवर सिंह
- ग्वालियर – तात्याटोपे
- इलाहाबाद – लियाकतअली
- झाँसी – रानी लक्ष्मी बाई
- असम – दीवान मनीराम दत्त
- मेरठ – कदमसिंह
- फैज़ाबाद – मौलवी अहमद उल्लाह
- संभलपुर – सुरेन्द्र साई

ब्रिटिश शासन के प्रारंभ से ही कानपुर भारत का प्रमुख सैनिक केंद्र रहा है। कानपुर में क्रांति का नेतृत्व बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने किया । कंपनी ने इन्हें उपाधि,महल और पेंशन से वंचित कर दिया तथा पुणे से निष्कासित कर के कानपुर में रहने को बाध्य किया। इतिहासकार राम किशोर बाजपेई बताते हैं कि नाना साहब ने अपना केस लड़ने के लिए अजीमुल्ला को इंग्लैंड भेजा। अजीमुल्ला की दलीलें कानूनी तौर पर नामंजूर कर दी गई व तर्क दिया गया कि बाजीराव पेशवा की कोई संतान नहीं थी। केस हारने के बाद अजीमुल्ला ने लंदन टाइम्स में पढ़ा की क्रीमिया में ब्रिटिश आर्मी पराजित हो रही है। इसकी जानकारी होने पर वह लंदन टाइम्स के पत्रकार डब्ल्यू एच रसेल से संपर्क कर रूस गए थे। रामकिशोर वाजपेयी बताते हैं कि अजीमुल्ला के दिमाग में यही से यह विचार आया कि विद्रोह के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य को परास्त किया जा सकता है, इससे पूर्व किसी ने ऐसा नहीं सोचा। अजीमुल्लाह ने रूस के सेनानायकों से मिलकर पूरी रणनीति को समझा। राम किशोर बाजपेई कहते हैं कि अजीमुल्ला के साथ बैठकर नाना साहब ने विद्रोह की रणनीति तैयार की और देश के सभी राजघरानों से संपर्क किया। नाना साहब ने स्वयं को पेशवा घोषित किया। इन्होंने अजीमुल्ला तथा तात्या टोपे की मदद से कई युद्ध अंग्रेजों से किये। नाना साहब के कमांडर इन चीफ या सैनिक सलाहकार तात्या टोपे को नियुक्त किया गया। कानपुर में 4 जून को क्रांति का आगाज हुआ। सूबेदार टीका सिंह ने यहाँ विद्रोह का शंखनाद किया तत्पश्चात सिपाहियों ने नवाबगंज की तरफ कूच किया

तथा सरकारी खजाने को लूटा, कई बंगलों को आग के हवाले कर दिया। उन्होंने जेल से कैदियों को रिहा किया वह कई स्थानों पर कब्जा करते हुए कल्याणपुर की ओर बढ़ें। कानपुर चलो का नारा बिठूर के किले से नाना साहब ने दिया। इनकी घोषणा के बाद सभी क्रांतिकारी दिल्ली न जाकर वापस कानपुर की ओर कूच कर गए। नाना साहब पेशवा की आवाज़ पर कानपुर की आस पास की रियासतें एकजुट हो गई थी। कानपुर के कोने कोने में आजादी की लौ 4 जून से 25 जून के बीच जल उठी। क्रांतिकारियों ने टुकड़ियों में बंटकर अंग्रेजों पर हमला किया। मराठा क्रांतिकारी तथा बिठूर के रमेलनगर के मल्लाहों ने नाना साहब का सहयोग किया। 27 जून 1857 को सर व्हीलर ने कानपुर में आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात क्रांतिकारियों ने तत्कालीन जनरल एच व्हीलर तथा कलेक्टर हिल्डरसन के समक्ष समझौता का प्रस्ताव रखा। इस समझौते में यह निर्णय लिया गया की अंग्रेज किला तुरंत खाली कर देंगे तो उन्हें इलाहाबाद जाने दिया जाएगा। सत्तीचौरा घाट पर नाव अंग्रेजों को ले जाने के लिए मंगवाई गई परन्तु जैसे ही नाव आगे बढ़ी तभी शंखनाद हो गया जिसे विद्रोह की बिगुल समझकर कुछ विद्रोही गंगा में कूद गए, भयभीत अंग्रेजों के नाविकों पर गोली चलानी शुरू कर दी तो विद्रोहियों पलटवार कर गोलियों चलाईं। यहाँ इनका अंग्रेजों से भीषण संघर्ष हुआ व अंग्रेजों को पराजय का सामना करना पड़ा।

सत्तीचौरा घटना के बाद अंग्रेजों की पत्नी व बच्चों को क्रांतिकारियों ने बंदी बना लिया तथा नाना साहब ने उन्हें सुरक्षित स्थान पर बीबीघर (नानाराव पार्क) भेज दिया, जिसकी जिम्मेदारी हुसैनी खानम नामक महिला को सौंपी गई। इतिहासकार अनूप शुक्ला कहते हैं की, यह पहली घटना थी जो सुनियोजित नहीं थी जिसे नाना साहब ने दूत भेजकर रोकने का आदेश दिया व उनके निर्देश के उपरांत 73 अंग्रेज महिलाओं तथा बच्चों को बचाया गया।

इस स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कानपुर की घेराबंदी के समय महिलाओं में अजीजन बाई का योगदान उल्लेखनीय है। अजीजनबाई एक तवायफ थी, जो कि नाना साहब से प्रेरित होकर विद्रोह में शामिल हुई थीं। इतिहासकार राना सफवी बताती हैं कि अजीजन ने हथियार चलाना सीखा और बाकी तवायफों को भी इसकी शिक्षा दी। ये रानी लक्ष्मीबाई की भाँति पुरुषों के लिबास धारण करती थी तथा घोड़ों की सवारी करती थी। अजीजन नाना साहब की प्रारंभिक विजय पर कानपुर में झंडा फहराने वाले जुलूस में शामिल थी। लता सिंह अपने लेख "मेकिंग द मार्जिन विज़िबल" में लिखती हैं कि अजीजन कानपुर में नियुक्त दूसरे घुड़सवार सेना की चहेती थी, उनका घर सैनिकों के मिलने का अड्डा था। उन्होंने औरतों का एक दस्ता तैयार किया जिसका नाम मस्तानी टोली रखा गया। इसमें शामिल समस्त महिलाएं पुरुषों की वेशभूषा तथा तलवार धारण करके घोड़ों पर चढ़कर नवयुवकों को क्रांति में शामिल होने के लिए प्रेरित करती थी साथ ही यह क्रांतिकारियों के जख्मों का इलाज करती थी व उन्हें गोला बारूद तथा हथियार उपलब्ध कराती थी। 1857 की क्रांति के दौरान मस्तानी टोली की तवायफें अंग्रेजों की छावनी में भी नृत्य के लिए जाती थी तथा वहाँ की गुप्त सूचनाएं हासिल करके स्वतंत्रता सेनानियों को देती थी। अंग्रेजों ने शक के आधार पर बिठूर में बहुत सी महिलाओं व बच्चों को मार दिया, जिसका बदला लेने के लिए क्रांतिकारियों के साथ मिलकर अजीजनबाई ने बीबीघर में सुरक्षित अंग्रेजों के बच्चों और महिलाओं को मौत के घाट उतार दिया और कुएं में फेंक दिया। इस घटना के बाद अंग्रेजों ने तवायफों के मोहल्ले को घेर लिया और उनकी निर्मम हत्याएं की परन्तु आजीजन बाई भाग निकलने में सफल रही और नाना साहब के वकील अजीमुल्ला के पास पहुंची नाना साहब ने अजीजन बाई को अपनी बहन माना और उन्हें एक तलवार भेंट करते हुए राखी भी बंधवाई। अवध क्षेत्र में आज भी कहीं कहीं यह सुनने को मिल जाता है–

फौजी टोपे से मिली अजीजन
हमहूँ चलब मैदान मा।
बहू बेटी के इज्जत लूटैं
काटि फैंकब मैदान मा।
अइसन राच्छस बसा न पइहैंमारी देब घमसान मा।
भेद बताउब अंग्रेजन कै
जेतना अपनी जान मा।
भेद खुला तउ कटीं अजीजन गईं धरती से आसमान मा।

इस कत्लेआम से अंग्रेजों के दिमाग में प्रतिशोध की भावना घर कर गयी। जनरल नील तथा हैवलॉक के नेतृत्व में अंग्रेजों की सेना ने दोबारा कानपुर में प्रवेश किया व क्रांतिकारियों की हत्याएं की। अजीजनबाई लंबे समय तक अंग्रेजों से बच नहीं सकी अंततः अंग्रेज उन्हें गिरफ्तार करने में कामयाब हुए, अंग्रेज अफसर ने इनकी आवाज व सुंदरता से प्रभावित होकर इनके समक्ष एक शर्त रखी यदि वे क्रांतिकारियों की गुप्त योजनाओं की जानकारी बता दें तो उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा परंतु अजीजनबाई ने जानकारी देने से इनकार कर दिया ऐसे में अजीजनबाई को मारने का फरमान जारी कर दिया। अंग्रेज सैनिकों ने अजीजनबाई के शरीर को गोलियों से छलनी कर दिया। 6 दिसंबर को सर कैम्पबेल ने कानपुर पर पुनः कब्जा कर लिया तथा तात्या तोपे को ग्वालियर में फांसी दे दी गई और नाना साहब नेपाल चले गए।

निष्कर्ष

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर अब तक देश के लिए कानपुर के अहम योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। आज भी नानाराव घाट इसकी गवाही देता है। 1857 विद्रोह भारत में ब्रिटिश शासन के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना थी, इसके कारण समाज में कई वर्ग संगठित हुए हालांकि क्रांति असफल रही परन्तु इसने भारतीयों में राष्ट्रवाद के बीज अंकुरित किए,ब्रिटिश शासन को गहरा आघात पहुंचाया। विद्रोह के बाद ब्रिटिश शासन की संरचना तथा नीतियों में भारी फेरबदल किया गया। क्रांति को भारतीय राष्ट्रवाद की आधारशिला व भारतीय इतिहास का परिवर्तन बिंदु माना जाता है।

संदर्भ सूची

1. विपिन चन्द्रः आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्रा. लिमिटेड, 2008
2. शेखर बंधोपाध्यायः प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद–आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लॉक स्वान स्कूल प्रा. लिमिटेड, 2006
3. आर. सी. मजुमदार; सिपोय म्यूटिनी ऐंड दी रिबेलियन ऑफ 1857 (कलकत्ता, 1963)
4. वी. डी. सावरकर, दी फस्ट वॉर ऑफ इंडियन इंडिपेंडेन्स, पुनर्प्रकाशित (दिल्ली 1970)
5. सीमा अल्वी, (1996): सिपोय ऐंड कंपनीः ट्रेडिशन ऐंड ट्रांजिशन 1770 से 1830, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
6. विश्वमॉयपति–हिस्टोरियंस एंड हिस्टोरियोग्राफ़ीः सिचुएटिंग 1857 (स्रोत–इकोनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली), वॉल्यूम 42 (2007)
7. रुद्रांसू मुखर्जी–स्पेक्टर ऑफ वायलेंसः 1857 कानपुर मैसकर, पेन्गुइन इंडिया (2007)